गांधीवादी ग्राम स्वराज एवं जनजातीय महिला स्वावलंबन

ललिता सोनवानी

सारांश

महिलाएं मानव समाज की मूल पृष्टभूमि है, निश्चित भू–भाग, सामान्य भाषा, संस्कृति जनजातीय होने का प्रमाणिक रूप है। पहले जनजातीय महिलाओं का जीवन रूढ़ीगत विचार, परम्परागत मान्यताओं, निर्धनता, दासता आदि से जकड़ा हुआ था लेकिन वर्तमान में जनजातीय महिलाएं रूढ़ीवाद परम्पराओं को तोड़ते हुए अपने जीवन में आगे बढ़ रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत की हर महिला चाहे वो ग्रामीण क्षेत्र की हो या शहरी क्षेत्र की आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने में सतत् प्रयासशील है। उनकी आत्मनिर्भरता और कार्यशीलता को बढ़ावा देने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार की अनेक योजनाएं जिसमें से एक है छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (बिहान) अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। महिलाएं छिन्दकांसा से टोकरी निर्माण कर उसे बेच कर आर्थिक रूप से स्वालंबी हो रही है। महिलाएं अपना काम स्वयं कर रही है साथ ही परिवार को आर्थिक रूप से सहयोग कर रही है। जनजातीय महिलाएं स्वालंबी होकर गांधीवादी ग्राम स्वराज के आदर्श को चरित्रार्थ कर रही है।

कुंजी शब्द : जनजातीय महिला, स्वालंबी, ग्राम स्वराज हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

प्रस्तावना

गांधी जी के ग्राम स्वराज संबंधी विचारों की आज उतनी ही सार्थकता है जितना की आज से 75 वर्ष पहले थी। उन्होंने स्वराज की आधारशिला ग्रामों को माना था। क्यों कि उनका मानना था कि भारत ग्रामों का देश है और ग्रामों की आत्मनिर्भरता पर ही देश की आत्मनिर्भरता सम्भव है। वे ग्राम स्वावलंबन पर ज्यादा जोर देते थे उनका तात्पर्य ऐसे गांवों से था जो अपने पैरों पर खड़ा हो स्वयं ही संसाधनों को जुटाने में समर्थ हो। वे सीता और द्रोपदी दोनों नारियों को अपना आदर्श मानते थे इसलिये नहीं कि ये धार्मिक पात्र है बल्कि ये दोनों साहसी थी। जब 1921 में महिलाओं के मतदान का मुद्दा उठाया गया तो इन्होंने इसका समर्थन किया। उनका मानना था कि महिलाएं स्वयं इतनी सबल है कि खुद कि ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण में अपनी भूमिका निभा रही है। उन्हें निर्डर और शसक्त बनना होगा, अन्याय का विरोध करना होगा। गांधी जी महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ–साथ उनकों आत्मनिर्भर बनाने पर जोर देते थे। उनका मानना था महिला समाज की मूल पृष्ठभूमि है।

प्रो. दुबे के अनुसार – भारतीय समाज में नारी के स्थान और उसकी भूमिका के विषय में प्रचलित मान्यताएँ धीरे–धीरे बदल रही हैं।

ललिता सोनवानी शोधार्थी, शा वि या ता स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

हॉटे के अनुसार महिलाओं की आर्थिक अवस्था और वैयक्तिक सामाजिक दर्जे में गहरे और महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

ग्राम स्वराज एवं जनजातीय महिला स्वावलंबन को उजागर करने का सही उद्देश्य है कि वर्तमान में समाज विकास के दौर तक आ चुका है उसमें महिलाओं की स्थिति कैसी है उसे जानने का प्रयास अपने अध्ययन विषय में किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के जशपुर जिला के कांसाबेल विकास खण्ड से ग्राम कोटानपानी का चयन किया गया है। यह ग्राम ग्रामीण एवं शहरी संस्कृति का मिलाजुला रूप कहा जा सकता है, इस ग्राम से 40 महिलाओं को जो कि बिहान से जुड़ी हुई है, इन महिलाओं को दैव निदर्शन पद्धति से चयनित कर तथ्यों को संकलित किया गया।

ग्राम स्वराज

गांधी जी के स्वराज का अर्थ है सब लोगो का राज्य और न्याय का राज्य वे ऐसा भारत चाहते थे, जिसमें गरीब से गरीब व्यक्ति यह महसूस करे कि यह उनका देश है। इनका प्रथम लक्ष्य गांव था क्यों कि उनका मानना था कि हमारे देश का विकास तभी होगा जब ग्रामीण क्षेत्रो का विकास होगा इन्होने गांव को निवास का एक आदर्श स्थान माना है इनका सपना एक ऐसे गांव का था जहा पर हर कोई स्वालंम्बी हो अपने द्वारा बनाऐ गये कपड़े पहने अपने दैनिक जीवन में अपने द्वारा उत्पादित देशी खाद्य पदार्थों को ग्रहण करें। गाँव में विभिन्न समुदायों के बीच परस्पर सहयोग की भावना हो सभी शिक्षित एवं आत्मनिर्भर हो। गांधीवादी आदर्श गांव में ग्रामोद्योग, महिलाओं की उच्च स्थिति, स्वच्छता, आदि शामिल है महिलाओं कि स्थिति उच्च होने के साथ–साथ उनको पुरूषों के समान सम्मान प्राप्त हो।

महिला स्वावलंबन

देश की हर महिला शैक्षणिक, शारीरिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सक्षम हो और हर क्षेत्र में महिलाओं को समान अवसर प्राप्त हो। महिलाएँ सफल होकर अपने कार्यक्षेत्र में नेतृत्व करें जिससे उनके परिवार का समग्र विकास हो। भारतीय समाज में समय–समय पर स्त्रियों की प्रस्थिति में सुधार देखा गया है। महिलाएं प्रत्येक समाज का अभिन्न अंग है, गांधी जी का मानना था कि महिलाओं को अपने अधिकारों और कर्तव्यों का ज्ञान होना चाहिए। महिलाओं को शसक्त बनाने की बात करते थे और इसकी शुरूआत परिवार से ही करनी होगी ऐसा उनका मानना था। गांव की महिलाएं अब उन्नति के रास्ते खुद से तैयार कर रही है और कुछ हद तक अब घर में मुखिया जैसा दर्जा प्राप्त हो रहा है। हमने देखा कि जनजातीय क्षेत्रों में महिलाएँ स्वालंम्बी हो रही है।

मेरे द्वारा प्रस्तुत अध्ययन से मुझे ज्ञात हुआ कि ग्राम कोटानपानी की महिलाएं अपने आजीविका के साधन के रूप में छिन्दकांसा को अपनायी है, चूंकि छिन्दकांसा स्थानीय क्षेत्र में आसानी उपलब्ध हो जाता है महिलाएं इसे एकत्रित कर सुखाकर बहुत सुंदर इकोफ्रेंडली टोकरी तैयार कर आमदनी प्राप्त कर रही है। उनके द्वारा बनाई गई आकर्षक टोकरी को विकास खण्ड स्तर पर प्रदर्शनी (स्टाल) लगाकर एवं हाट बाजार में एवं

विभिन्न विभागों में भी बिक्री करना शुरू किया गया। जिससे दिन–प्रतिदिन छिन्दकांसा टोकरी की मांग अब राज्य के राजधानी में भी होने लगी। महिलाओं के द्वारा सत्र 2021 में लगभग 1 लाख एवं सत्र 2022 में 40 हजार रूपये की छिन्दकांसा टोकरी का बिक्री किया जा चुका है। छिन्दकांसा की टोकरी निर्माण को अपने आजीविका का साधन बनाकर आर्थिक लाभ कमा रही है, और ये सभी महिलाएं छत्तसीगढ़ राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन में जुड़ कर अपने पंचायत के अन्य महिलाओं को छिन्दकांसा टोकरी बनाने का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य करते हुए अपने परिवार की आर्थिक सहायता कर अच्छे मुकाम पर पहुंच रही है और गांधीवादी ग्राम स्वराज के आदर्श को चरितार्थ कर रही है और अपने जीवन में आगे बढ़ रही है।

उपलब्धि

जनजातीय महिलाओं के उत्कृष्ट कार्य के लिए स्पीकआउट कार्यक्रम के माध्यम से दिनांक 24 दिसम्बर 2021 को माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा सम्मानीत किया गया है।

सुझाव

यदि महिलाएं अपनी निर्णय लेने की क्षमता का विकास सही समय में करेंगी तो निश्चित ही जीवन में उनको सफलता मिलेगी साथ ही सामाजिक–आर्थिक रूप से सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनेंगी, जिससे उनके जीवन स्तर में भी सुधार होगा।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः वर्तमान में जनजातीय महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति के साथ–साथ उनके जीवन शैली में कुछ परिवर्तन हुआ है। परिवार के भरण–पोषण के लिए घर से बाहर निकल रही है, कुछ हद तक उनके शिक्षा का नवीन चेतना की स्फूर्ति का संचार हुआ है साथ ही आजीविका का अवसर मिलने से अब महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त हो रही है अपनी रूची के अनुसार काम चुनकर अपना जीवन यापन कर रही है अपने शक्तिशाली विचारों एवं कार्यों के माध्यम से समाज में आगे बढ़ रही है साथ ही अपने सपने को साकार करते दृष्टिगत है। साथ ही आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करते हुए स्वालंबी बन रही है। किन्तु उनका जीवन दर्शन पूर्णरूप से बदला नहीं है।

संदर्भ -

1. डॉ. डी.सी. पन्त भारत में ग्रामीण विकास, पृष्ठ 18 विश्व भारती पब्लिकेशन्स नयी

दिल्ली 1100021

2. डॉ. अभिलाषा सैनी समाजशास्त्र, आगरा रोड, दौसा-303303

3. मासिक पत्रिका जनमन 15 अक्टूबर 2021

4. हरिभूमि न्यूज 2021 जशपुर नगर।